Literacy for a Billion

Movie: Laila Majanu
Year: 1979

Song: Is Reshmi Paazzeb Ki Jhankar
Lyricist: Sahir Ludhianvi

इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके
जिसने ये पहनाई है
उस दिलदार के सदके
जिसने ये पहनाई है
उस दिलदार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके

उस जुल्फ़ के कुर्बान
लबों रूख़सार के सदके
उस जुल्फ़ के कुर्बान
लबों रूख़सार के सदके
हर जलवा था इक शोला
हुस्न ए यार के सदके
हर जलवा था इक शोला
हुस्न ए यार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके

जवानी माँगती थी
ये हसीं झंकार बरसों से
जवानी माँगती थी
ये हसीं झंकार बरसों से
तमन्ना बुन रही थी

धड़कनों के हार बरसों से
छुप छुप के आनेवाले
छुप छुप के आनेवाले
तेरे प्यार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके

जवानी सो रही थी
हुस्न की रंगीं पनाहों में
जवानी सो रही थी
हुस्न की रंगीं पनाहों में
चुरा लाए हम उनके
नाज़नी जलवे निगाहों में
चुरा लाए हम उनके
नाज़नी जलवे निगाहों में
क़िस्मत से जो हुआ है
उस दीदार के सदके
क़िस्मत से जो हुआ है
उस दीदार के सदके
उस जुल्फ़ के कुर्बान
लबों रूख़सार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके

नज़र लहरा रही है
ज़िस्म पे मस्ती सी छाई है

Literacy for a Billion

नज़र लहरा रही है

ज़िस्म पे मस्ती सी छाई है
दुबारा देखने के शौक़ ने
हलचल मचाई है
दुबारा देखने के शौक़ ने
हलचल मचाई है
दिल को जो लग गया है
उस आज़ार के सदके
दिल को जो लग गया है
उस आज़ार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की

झंकार के सदके

उस जुल्फ़ के कुर्बान
लबों रूख़सार के सदके
जिसने ये पहनाई है
उस दिलदार के सदके
जिसने ये पहनाई है
उस दिलदार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके
इस रेशमी पाज़ेब की
झंकार के सदके

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.